प्रेस विज्ञप्ति
साहित्योत्सव 2017 का शुभारंभ
अकादेमी प्रदर्शनी का उद्घाटन प्रो. सत्यव्रत शास्त्री द्वारा
साहित्य अकादेमी अनुवाद पुरस्कार 2016 की घोषणा
शब्द ज्योति के बिना हर तरफ़ अँधेरा – प्रो. सत्यव्रत शास्त्री

नई दिल्ली, 21 फ़रवरी 2017 । ''उक्ति विशेष, यानि कहने का ढंग ही काव्य है और वह हर भाषा में संभव है। शब्द नाम की ज्योति अगर प्रकाशित न हो तो तीनों लोकों मं अंधकार व्याप्त हो जाएगा।'' उक्त उद्गार प्रख्यात संस्कृत विद्वान तथा साहित्य अकादेमी के महत्तर सदस्य प्रो. सत्यव्रत शास्त्री ने साहित्य अकादेमी की वार्षिक प्रदर्शनी का उद्घाटन करते हुए कहे। संस्कृत आचार्यों द्वारा साहित्य के बारे में कही गई परिभाषाओं को उद्धृत करते हुए उन्होंने कहा कि साहित्यकार काव्य रचना करते हुए अपने लिए एक अलग संसार की रचना करता है जो साहित्यिक रचना का रूप प्राप्त कर अजर–अमर हो जाते हैं। साहित्य अकादेमी के साथ 1967 से अपने संबंधों को याद करते हुए कहा कि यह संस्था देश की प्रतिनिधि साहित्य संस्था है और इसी के द्वारा मुझे देश के अधिकतर लेखकों से परिचित होने का मौका मिला है। साहित्य अकादेमी की प्रगति पर प्रसन्नता जाहिर करते हुए उन्होंने कहा कि अपनी यानि साहित्यकारों की संस्था का निरंतर आगे बढ़ना हम सभी के लिए प्रसन्नता का विषय है। इससे पहले अपने संक्षिप्त उद्गार में साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष प्रो. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी ने अकादेमी की वर्ष 2016 की उपलब्धियों की चर्चा करते हुए अकादेमी परिवार को उनकी उपलब्धियों पर बधाई दी।

अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव ने वर्ष 2016 की उपलब्धियों की चर्चा करते हुए बताया कि अकादेमी ने पिछले वर्ष 580 कार्यक्रम किए यानि हर 15 घंटे में एक कार्यक्रम, 482 पुस्तकें प्रकाशित की यानि हर अठारह घंटे में एक पुस्तक। इतना ही अकादेमी ने देशभर के 178 पुस्तक मेलों में अपनी उपस्थिति दर्ज कराई। 98 पुरस्कारों के लिए बनी चयन समितियों में दो हजार तीस से ज्यादा निर्णायकों ने अपने मत प्रकट किए। साहित्यकारों पर चार नई फ़िल्में भी बनवाई गई जिससे साहित्यकारों पर उपलब्ध फ़िल्मों की संख्या 127 हो गई है।

साहित्योत्सव के पहले दिन का अगला कार्यक्रम मातृभाषा संरक्षण पर दो द्विवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी थी, जिसका शुभारंभ दोपहर 2.30 बजे हुआ। ज्ञात हो कि आज अंतर्राष्ट्रीय मातृभाषा दिवस है। प्रख्यात कन्नड लेखक प्रो. एस.एल. भैरप्पा ने संगोष्ठी का उद्घाटन किया। साहित्य अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव ने सभी प्रतिभागियों का स्वागत किया। प्रख्यात असमिया लेखक डॉ. ध्रुव ज्योति बोरा ने बीज–वक्तव्य प्रस्तुत किया। सभी वक्ताओं ने मातृभाषा संरक्षण की ज़रूरत पर बल देते हुए कहा कि भूमंडलीकरण के इस दौर में अपनी मातृभाषा की रक्षा बहुत ज़रूरी है। भारत जैसे बहुभाषी देश में यह समस्या और चिंता–जनक है। अतः विलुप्त हो रही भाषाओं को बचाने

और संरक्षित करने के लिए बड़े पैमाने पर काम करने की ज़रूरत है। साहित्य अकादेमी ने आज अपने अनुवाद पुरस्कार 2016 की भी घोषणा की। अभी यह 22 भारतीय भाषाओं को प्रदान किए गए हैं। दो भाषाओं के पुरस्कार बाद में घोषित किए जायेंगे। भाषा सम्मान अर्पण समारोह में चार विद्वानों –– हरिहर वैष्णव (हल्बी), निर्मल मिंज (कुरुख), लोजङ जमस्पल एवं थुप्सटन पालदन (लद्दखी) –– को सम्मानित किया गया। शाम 7.00 बजे कला वारसो ट्रस्ट, कच्छ द्वारा कच्छी संगीत प्रस्तुत किया गया।

साहित्योत्सव में कल साहित्य अकादेमी पुरस्कार 2016 अर्पण समारोह, कमानी सभागार में सायं 5.30 बजे संपन्न होगा। समारोह के मुख्य अतिथि प्रख्यात वैज्ञानिक तथा मराठी साहित्यकार डॉ. जयंत विष्णु नार्लीकर होंगे। पुरस्कार अर्पण समारोह के बाद प्रसिद्ध कलाकार संध्या पुरेचा भरतनाट्यम नृत्य प्रस्तुति करेंगी। इसी दिन लेखक से भेंट कार्यक्रम के अंतर्गत दोपहर 2.30 बजे भारतीय अंग्रेज़ी लेखिका रूपा बाजवा अपनी रचना यात्रा के बारे में बतायेंगी।